ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 223-226

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

शाश्वत काशी की स्थापत्य कलाओं का एक अनुशीलन अध्ययन

1. सन्तोष कुमार
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येता, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-07.12.2023, Revised-13.12.2023, Accepted-18.12.2023 E-mail: santoshmta3@gmail.com

सारांशः ***विश्व की प्राचीनतम् नगरी में नाम लिया जाए तो काशी, बनारस व वाराणसी सर्वोपरि है। जिसका इतिहास भगवान शिव से जोड़ा गया है। ऐसा मान्य हैं कि यह नगर कला–संस्कृति, संगीत, आध्यात्मिक रहस्यों से भरा है। यहां की एक–एक गलियां, गंगा के किनारे पर निर्मित छोटे–बड़े मंदिरों की श्रृंखला अन्य कहीं शहर में दिग्दर्शित नहीं होती है। यहाँ गंगा नदी दक्षिण से उत्तर की ओर प्रवाहित होती हैं। नदी के पश्चिम तट जल में तैरती नाव, सीढ़ियां, मंदिरों, घाटों, चबूतरों व गलियों, महलों जो शहर के छोटे–बड़े सड़कों से जुड़ी हैं। यह अद्भुत अनोखा प्राचीन– नवीन कला–संस्कृति की सौंदर्य पराकाष्ठा लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।***

कुंजीभूत शब्द– कला–संस्कृति, संगीत, आध्यात्मिक रहस्यों, दिग्दर्शित, अनोखा प्राचीन– नवीन कला–संस्कृति, सौंदर्य पराकाष्ठा।

कलाओं की प्रशिक्षण के लिए विभिन्न संस्थाओं जैसे– काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय व छोटे–बड़े संगीत घराने आदि प्रसिद्ध हैं। यहाँ सनातन, बौद्ध, जैन व इस्लामी आदि सभी मजहबों की स्थापत्य संयोजन से विशाल नगर के रूप में विराजमान हैं। बहुत सारी अनुभूतियों को समेटे काशी की नगरी जिसमें भ्रमण विचरण व प्रस्थान करने से नैसर्गिक, अलौकिक, वैचारिक अनुभूति होती है। बनारस के कला व संस्कृति के स्पर्श मात्र से लोग मतवाले होकर आनंद की अनुभूति करते हैं। ये 'शाश्वत काशी की कला का अनुशीलन' ही तो हैं। इसको आम जनमानस में सनातन धर्म के सबसे पवित्र तीर्थस्थलओं में जाना जाता है। मध्यकाल में भारत आने वाले तमाम यात्रियों ने तो इसे सनातन धर्म के काबा के तौर पर मान्यता दी है।

बौद्ध धर्म धमेक स्तूप, गुप्तकाल, सारनाथ, वाराणसी (चित्र सं० 1)

बनारस का दूसरा अघोरी संप्रदाय इसके प्रमुख संत बाबा कीनाराम थे। हेमंत शर्मा ने अपनी रचना 'देखो हमारी काशी 'में लिखें हैं कि "यहाँ की मिट्टी में कबीर का अक्खाड़ाता, तुलसी की भक्ति, रैदास की कठौती, प्रसाद का सौंदर्य सब कुछ मिलता जुलता हैं।" नाना प्रकार के कुटीर उद्योगों की श्रेणी में प्राचीन काल में बन गई थी। जैसे– कुंभार श्रेणी की बनाए हुए मिट्टी के भांड और खिलौने के भंडारण भारत कला भवन, बी०एच०यू०, वाराणसी में भरे हैं। पत्थर की मूर्तियाँ बनाने वाले शिल्प श्रेणी की काशी में बहुत सक्रिय थी, जिसका प्रमाण सारनाथ संग्रहालय की नानाविध मूर्तियों और शिल्पों की ऊकेरी गई रूपों में प्राप्त है। काशी के वस्त्र तो जातक युग से ही नामी हो गए थे। वही सारनाथ के धमेक स्तूप (चित्र सं०1) के शीला पट्टओं पर अलंकार अपनी शोभा बढ़ाती है जो काशी के वस्त्रों की पुरातन कला आज भी गमक रही हैं। वस्त्रों में बनारसी साड़ी विश्व में चर्चित हैं।

इस प्रकार जीवन के भागम–भाग में एक दूसरा सत्य मृत्यु है। यहां मृत्यु को जीवन के अन्त की तरह नहीं बल्कि जीवन का एक हिस्सा माना जाता है। सनातन मान्यताओं के अनुसार काशी मोक्ष की नगरी है। दो प्रसिद्ध श्यमंशान मणिकर्निका घाट व हरिशचंद्र घाट यहां पर दिन–रात मृतकों का अंतिम संस्कार होता रहता है। यहां चीता की अग्नि कभी शांत नहीं होती है इसलिए प्राचीन काल में देशभर के लोग जीवन की सारी जिम्मेदारी पूरी कर अपने आखिरी पलों में मोक्ष प्राप्त करने आते हैं। मान्यता है कि काशी में जीवन के अंतिम सफर को मृत्यु से मोक्ष प्राप्ती की कामना करते हैं। यही मुमुक्षु भवन में साधु, वृद्धों की टोली, हरिश्चंद्र व मणिकर्णिका श्यमशान की राख का भस्म लगा, अघोरियो का भांग–धतुरा भोग ,चीलम से धुआँ उड़ाए। फागुन माह में खेले मसाने में होरी, सुबह उठकर करते कुश्ती, गंगा में डुबकी लगावें, बम–बम भोले, हर–हर महादेव की पूकार, मंदिर का घंटा, डमरू, आरती की ध्वनि और मस्जिद में अजान सुनाई देती हैं। बनारस में बाबा कीनाराम का बेहद श्रद्धा से देखा जाता है। इस संप्रदाय के साधु अघोरी कहलाते हैं जो अपने तंत्र–मंत्र विद्या के लिए भी जाने जाते हैं। साधु संतों के अलावा मिर्जा गालिब ने इसी शहर के लिए एक बेहद लंबी नज्म "चिराग–ए–दैर" यानी मंदिर का दीपक भी लिखी। यही के शहर में जहां महान शहनाई वादक भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खान बालाजी मंदिर में बैठकर अपनी संगीत साधना का रियाज किया करते थे।

काशी प्राचीन काल से ही मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्तकाल से परम्परों का विकास होता चला आ रहा हैं। छठी शताब्दी ई०पू० में भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश धर्म चक्रप्रवर्तन, काशी के सारनाथ में दिए थे। पांच बिच्छुओं के साथ बौद्ध संघ की स्थापना की और बुद्धिज्म की शुरुआत यहीं से हुई । सारनाथ में मौर्य कालीन अशोक स्तम्भ सिंह शीर्ष, मूर्तिकला का एक अद्भुत उदाहरण हैं जिसके चारों दिशाओं में मुँह किये चार सिंन्हो, ओजपूर्ण मूर्तियाँ भारत के राष्ट्रीय–चिन्ह होने का गौरव प्राप्त हैं। यह सिंह शीर्ष स्तम्भ

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

चुनार पत्थर से निर्मित हैं। धर्मराजिका स्तूप इटों से निर्मित, धर्मकूटी एकास्मक चुनार पत्थर और गुप्त काल की धमेक स्तूप, धर्मचक्रप्रवर्तन मूर्ति पद्मासन में बैठें बुद्ध को चुनार पत्थर से तराशा गया हैं। मुखमण्डल पर शान्ति, गंभीरता व कोमलता का भाव हैं। ये सभी मूर्तियां सारनाथ संग्रहालय में संरक्षित हैं।

वैदिक साहित्य अथर्ववेद में काशी का सबसे पहले उल्लेख मिलता है। शिवपुराण, अग्निपुराण, ब्रह्मपुराण, मत्स्यपुराण, स्कंदपुराण में भी काशी के बारे में वर्णन किया गया है। इसके अलावा महाभारत व रामायण में भी इसकी विशेषता के बारे में वर्णन हुआ है। स्कंदपुराण में 1500 श्लोक में काशी के विभिन्न तीर्थ के बारे में बताया गया है। इसके अलावा 635 ई० में चीनी यात्री व्हेनसॉन्ग ने भी काशी के बारे में बताया है। इस शहर में भगवान शिव को समर्पित सैकड़ो मंदिर जिसमें सबसे प्रमुख है शूलकंतेश्वर मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर बी0एच0यू0 परिसर, संकट मोचन हनुमान जी, तुलसी मानस मंदिर, दुर्गा माताः कुष्मांडा देवी का पुराना मंदिर, माता अन्नपूर्णा मंदिर, भारत माता मंदिर, मां संकटादेवी मंदिर, महामृत्युंजय मंदिर, काशी करवट, मंदिर बाबा किनाराम का मंदिर, नेपाली मंदिर आदि हैं। 18वीं शताब्दी में मराठा शासको द्वारा घाटों का निर्माण कराया गया। वैसे तो छोटे–बड़े मिलाकर 100 से अधिक घाट है लेकिन 84 घाट विशेष रूप से जाने जाते हैं। इनमें से 9 घाट काफी अस्सी घाट, चेतसिंह घाट दरभंगा घाट, दशाश्वमेंघ घाट, मां शीतला मंदिर घाट, मणिकर्णिका घाट, हरिशचंद्र घाट, सिंधिया घाट, भोसले घाट, पंचगंगा घाट और नमोः घाट भी बहुत सारे घाट प्रसिद्ध है। यह नगरी हिंदू विचार धारा की तो केंद्र स्थली थी ही पर हमें संदेह नहीं की बुद्ध के पहले भी यह ज्ञान का प्रथम केंद्र थी। अशोक के युग से यहां बौद्ध धर्म फुला–फला तीर्थंकर पार्श्वनाथ की जन्मस्थली होने के कारण जैन भी अपना अधिकार मानते हैं।

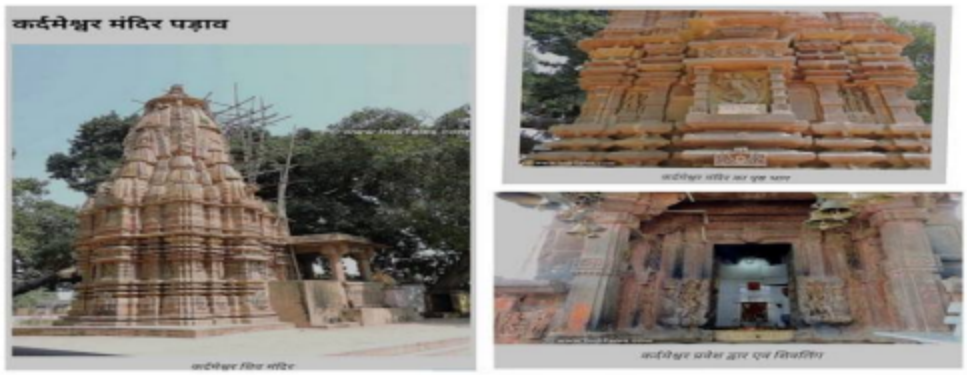

कर्दमेश्वर शिव मंदिर, कंदवा, वाराणसी (चित्र सं०–2)

बनारस पंचक्रोशी यात्रा के लिए भी काफी विश्व प्रसिद्ध है। यात्रा 25 कोस का होता है। पंचक्रोशी यात्रा के दौरान 108 शिवलिंग, 11 विनायक, 10 अन्य शिव मंदिर, 10 देवी, 4 विष्णु, 2 भैरव और 14 अन्य देव मंदिर स्थित है। जिसकी यात्रा के दौरान दर्शन पूजन किया जाता है। यात्रा अधिकतर शिवरात्रि के दिन ही किया जाता है। इस यात्रा की शुरुआत मणिकर्णिका कुंड में संध्या के समय स्नान करके अंजली मुद्रा में जल अर्पण करते हुये प्रण लेते हैं। यह यात्रा मलमास में भी की जाती है जो दो या तीन वर्ष के बाद आती है हिंदू तिथि पत्र के फाल्गुन, बैशाख और चैत्र महीने में किया जाता है। यह रास्ता पांच पड़ाव से गुजरते हुए जाता है।

1–कर्दमेश्वर शिव मंदिर (कंदवा)– पहला पड़ाव, मणिकर्णिका से कर्दमेश्वर महादेव मंदिर पहला पड़ाव हैं और फिर वहां से भीमचंदी मंदिर पड़ाव, इसके बाद अगला पड़ाव रामेश्वर, रामेश्वर के बाद शिवपुर और फिर कपिलधारा, फिर अन्त में मणिकर्णिका तक का सफर पूर्ण होता है। कर्दमेश्वर महादेव मंदिर काशी का सबसे प्राचीन मंदिर बचा हुआ, यह मंदिर वाराणसी के कंदवा (चित्र सं०–2) नामक स्थान परमें स्थित है। जिसका उल्लेख है कि कालांतर में इस मंदिर का निर्माण चंदेल राजाओं ने कराया था लेकिन कुछ विद्वानों ने गढ़वाल राजाओं के द्वारा बनवाया गया हैं। जो वास्तुकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह मंदिर नागर शैली में निर्मित पंचरत्न प्रकार का है। यह स्थल की योजना में चौकोर, अंतराल और अर्द्ध मंडप है। मंदिर के ऊपरी भाग में नक्काशीदार कांगुरा, आमलक सहित सजावटी शिखर है। प्रो० मारुती नंदन तिवारी के शब्दों "यह मंदिर गढ़वाल काल का 12वीं शताब्दी का है और काशी का एकमात्र सुरक्षित प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर कर्दमेश्वर तालाब के किनारे निर्माण हुआ है। तालाब का निर्माण 18वीं शताब्दी में रानी भवानी ने कराया था और इस जगती के बाद इस जगती का निर्माण खजुराहो के मंदिर से मिलता अधिष्ठान है, जो हम देख सकते हैं। उसके बाद जांघ यानि दीवार जिस पर मूर्तियां बनी हुई है और उसके ऊपर वरंट है जो छोटा सकर्णिक होगा यह जो दीवार है, जगह है मंडोवर इसे कहते हैं वे द्वितल है। दोनों में मूर्तियां हैं, मूर्तियां आली में यानी रथिका में नीचे की ओर स्थापित है।"

मंदिर के वेदियों के बाहर उत्क्रीण मूर्ति में उत्कीर्ण अर्धनारीश्वर, वामन, ब्रह्मा और विष्णु आदि कई देवी देवता हैं। मंदिर के निकट ही विरुपाक्ष की मंदिर स्थापित है जो मंदिर के समीप ही हैं। इस मंदिर के बाएं और कुछ दूरी पर पंचक्रोशी यात्रियों के लिए धर्मशाला भी है, जिसमें पंचक्रोशी यात्री विश्राम करते हैं। क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी सुभाषचंद्र यादव के शब्दों में " शिव को समर्पित या मंदिर इस मामले में बहुत महत्वपूर्ण है कि मंदिर के बाहर चारों तरफ देखते हुए हिंदू धर्म के जो तीन संप्रदाय हैं शैव, वैष्णव, शाक्य इन तीनों से संबंधित देवताओं की मूर्तियां हैं उसे पर ब्रह्मा की मूर्ति है विष्णु की भी मूर्ति है शिव के तमाम स्वरूप है उमा महेश्वर से लेकर अर्धनारीश्वर अंधकासुर वध से लेकर दुर्गा तक बलराम और रेवती की मूर्तियां वह नाग आकृतियां हैं इस तरह से भारतीय संस्कृति में अपने तीनों संप्रदायों से जुड़े हुए मूर्तियों को तराशा गया है पौराणिक रूप से यह माना जाता है कि यह कर्दमऋषि का आश्रम था।"

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

2– भीमचंदी मंदिर– यह मंदिर शिव संकेत ईश्वर के नाम से जाना जाता है यह मंदिर गंधर्व सागर कुंड के किनारे स्थित है। इस मंदिर में शिवलिंग के पास 5 पांडवों की छोटी मूर्तियां हैं। मंदिर नागर शैली में बना हुआ है। इस तरह रामेश्वर मंदिर पड़ाव जो वरुणा नदी के किनारे स्थित है। कहां जाता है कि भगवान राम ने स्वयं अपनी पंचकोशी यात्रा के दौरान इस मंदिर में शिव शिवलिंग की स्थापना की थी। मंदिर के पास ही लक्ष्मी मणेश्वर मंदिर, भारतेश्वर मंदिर और शत्रुघ्नेश्वर मंदिर स्थित है जो भगवान राम के छोटे भाइयों से संबंधित है यह मंदिर देवी तूलजा भवानी को समर्पित है। यह महाराष्ट्र के शिवाजी महाराज की कुलदेवी हैं रामेश्वर में तुलजा भवानी की मूर्ति बहुत बड़ी है। शिवपुरी मंदिर पड़ाव यह मंदिर बहुत ही साधारण है यहां पांच विभिन्न आकारों के शिवलिंग है, जो पांडवों के द्वारा स्थापित किया गया था। इस मंदिर के पास द्रोपदी कुंड हैं। इसी क्रम में कपिलधारा मंदिर पड़ाव यह मंदिर वाराणसी के उत्तरी छोर की ओर स्थित है नीचे स्थित बड़े से जलकुंड को देख सकते हैं कपिल मुनि द्वारा स्थापित यह महादेव मंदिर है जो कपिलधारा काशी कहा जाता है। जौं गणेश मंदिर और आदिकेशव मंदिर पंचकोशी यात्रा के आखिरी पड़ाव पर जो गणेश मंदिर जो छोटा सा है और बहुत सुंदर है इसमें गणेश जी की मूर्ति स्थापित है यहां से गंगा और यमुना के संगम को देख सकते हैं यह मंदिर आदि केशव घाट के उत्तर बना है यहां से फिर नाव लेकर मणिकर्णिका घाट जाया जाता है। इस प्रकार संक्षिप्त में काशी में पांच क्रोशिया यात्रा का हुआ है जो हमारे सनातन धर्म के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल माना जाता है।

3– काशी विश्वनाथ मंदिर– यह मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है यह गंगा के पश्चिमी तट पर स्थित काशी नगरी भगवान शिव के त्रिशूल के नोक पर बसी है। इस मंदिर को आक्रांताओं ने बहुत बार नष्ट किया। इसके बाद 1585 में बादशाह अकबर ने नवरत्नों में से एक राजा टोडरमल की मदद से पंडित नारायण भट्ट ने फिर से मंदिर का निर्माण कराया। 18 अप्रैल 1669 ईस्वी में औरंगजेब ने इसे ध्वस्त करने का आदेश दिया। विश्वनाथ मंदिर के पश्चिमी छोर पर ज्ञानवापी मस्जिद का निर्माण कराया। 1780 ई0 में इंदौर के मराठा महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने इसका निर्माण करवाया, 1835 ई0 में महाराजा रणजीत सिंह ने मंदिर के लिए 1000 किलो शुद्ध सोना दान दिये। इससे मंदिर के शिखर व कलश को बनाया इस मंदिर को स्वर्ण मंदिर के रूप में भी जाने जाना लगा मूल काशी मंदिर काफी छोटा था। वर्तमान में इस मंदिर का भव्य निर्माण हुआ। यह मंदिर प्राचीन और नवीन दोनों का मेल खाती हुई प्रतीत होती है। सन् 2019 में काशी विश्वनाथ मंदिर के भव्य प्रांगण के चारों ओर कॉरिडोर का शीलान्यास किया गया और अगस्त 2021 में उद्घाटन किया गया। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी के द्वारा किया गया जो इतिहास के पन्नों में एक नई कड़ी जुड़ गई। वर्तमान में यह मंदिर बहुत ही भव्य और सुंदर है जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

4– वाराणसी के काल भैरव मंदिर– यह विश्वेश्वर गंज का प्राचीन मंदिर है। मान्यता है कि बाबा विश्वनाथ जी ने काल भैरव जी को काशी क्षेत्रपाल या कोतवाल नियुक्त किए है। बिना उनकी अनुमति से कोई भी काशी में नहीं रह सकता है। इस मंदिर का निर्माण 17वीं शताब्दी में हुआ है। यहां रविवार और मंगलवार को अपार भीड़ श्रद्धालुओं की लगती है आरती के समय गड़े घंटा डमरू की ध्वनि बहुत ही मनमोहक लगती है। यहां बाबा को प्रसाद में शराब पान का विशेष महत्व है। बाबा काल भैरव को भगवान शिव का उग्र रूप माना जाता है।

5– तुलसी मानस मंदिर– यह मंदिर प्रभु श्रीराम व माता सीता जी को समर्पित है। यह मंदिर उस स्थान पर निर्मित है जहां गोस्वामी तुलसीदास जी ने रहकर महाकाव्य रामचरितमानस लिखा करते थे। यह मंदिर संगमरमर के द्वारा निर्मित आधुनिक मंदिर है। दुर्गा माता मंदिर का निर्माण 18वीं शताब्दी में बंगाली महारानी द्वारा निर्मित कराया गया था। यहां एक प्राचीन कुंड है, पत्थरों की कारीगरी बहुत सुंदर है। मंदिर को लाल रंग से रंगाई हुआ हैं । मंदिर को नागर शैली में बना हैं।

6– भारत माता मंदिर– वाराणसी में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के परिसर में स्थित है इस मंदिर के जमीन पर संगमरमर में खुदा हुआ अविभाजित भारत का एक विशाल मानचित्र है। यह मंदिर भारत माता को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण बाबू शिव प्रसाद गुप्त द्वारा किया गया है। इस मंदिर का उद्घाटन महात्मा गांधी द्वारा किया गया था। भारत में एक मात्र ऐसा मंदिर है जिसमें मूर्ति नहीं है।

7– विश्वनाथ मंदिर (बी.एच. यू.)– आधुनिक काल में बना या मंदिर वाराणसी में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के परिसर में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण बिरला जी के द्वारा किया कराया गया था, इसलिए इसे बिरला मंदिर भी कहते हैं।

काशी विश्वनाथ मंदिर व भव्य द्वार (चित्र सं० –3)

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

8– वर्वेद महामंदिर (स्वर्वेद अर्थात् स्वः वेद = आत्मा + परमात्मा)– भारतीय विरासत की झलक दर्शाती जटिल नक्काशिदार बालुआ पत्थर संरचनायें दुनियाँ का सबसे बड़ा ध्यान केंद्र काशी में हैं। यह एक मात्र मंदिर हैं जहा देव मूर्ति नही हैं सिर्फ योग ध्यान आध्यात्म की नक्कशी हैं। यह 7 मंजिला स्वर्वेद महामंदिर देश की आध्यात्मिक–सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी के उमरहाँ (चित्र सं०–4) में निर्माणाधीन विशाल साधना केंद्र स्वर्वेद महादेव मंदिर शिल्प और अत्याधुनिक तकनीक के अद्भुत सामंजस्य का प्रतीक हैं।

स्वर्वेद महामंदिर चौबेपुर, वाराणसी (चित्र सं० – 4)

यह मंदिर की माप प्रांगण 64 हजार वर्ग फिट में बना है और इसका मुख्य गुम्बद 125 पंखुड़ियों से युक्त विशालकाय कमल पुष्प की तरह हैं। इसकी ऊँचाई 180 फीट हैं। मंदिर की दीवारों मकाराना पत्थर पर स्वर्वेद के 4000 दोहे अंकित किये गए हैं। बाहरी दिवारों पर 138 प्रसंग वेद उपनिषद, महाभारत, रामायण, गीता आदि के प्रसंग पर चित्र बनायें गए हैं, ताकि लोग उससे प्रेरणा लें सके। इसमे लाखों साधक एवं साधिकाये सभी के कल्याण की कामना हेतु वेदध्वनि के बीच आहुति दे रहे हैं।

काशी करवट मंदिर ध्रत्लेश्वर मंदिर, शूलकंतेश्वर मंदिर, संकट मोचन हनुमान मंदिर मां संकटा देवी का मंदिर। महामृत्युंजय मंदिर, अन्नपूर्णा देवी का मंदिर, स्वर्वेद महामंदिर आदि बहुत से छोटे–बड़े मंदिर लोगों के आस्था से जुड़े हुये हैं। आत्म संतुष्टि व शान्ति के लिए लोग काशी दर्शन के लिए दूर–दूर से तीर्थ यात्रा करने आते हैं। इस लघु–शोध के द्वारा काशी की स्थापत्य के बारे में थोड़ी सी जानकारी उजागर करने का प्रयास किया हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि शाश्वत काशी की स्थापत्यकला का एक अनुशीलान अध्ययन से आपके ज्ञान को बढ़ाने में मदद मिलेगा और एक बार काशी दर्शन के लिए अवश्य पधारेगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, हेमंत :(2022) देखो हमारी काशी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
2. पाण्डेय, त्रिलोकनाथ : (2022) काशी कथा, प्रलेख प्रकाशन, मुंबई स
3. बाजपेई, विनीत : (2018) काशी काले मंदिर का रहस्य, ट्रीशर्ड बुक्स।
4. सिंह, काशीनाथ : (2006) काशी का अस्सी, रा० कमल प्र०, प्रा0 लि0 द्वारा, दिल्ली।
5. घोष, विश्वनाथ : (2021)जिओ बनारस,आजाद घर पब्लिकेशन।
6. मानव, शंभूनाथ : (2018) काशी का संक्षिप्त इतिहास, दी भारतीय विद्या प्रकाशन।
7. चंद्र, डॉ0 मोती : (2018) काशी का इतिहास,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
8. पाठक, अरुण :(2018)मोक्षदायनी काशी, लुमिनीस बुक्स, वाराणसी।
9. शर्मा, केदारनाथ : (2004)काशी दर्शन, चोवखंभा संस्कृत सीरीज ऑफिस।
10. कविराज, डॉ0 गोपीनाथ :(1998) काशी की साश्वत साधना, बिहार राष्ट्रभाषा परीषद, पटना।
11. https:// holyvoyagen. com
12. https://kevinstandugephotography. wordpress. com
13. https://srikashivishwanath.org
14. https://lu.m.wikipedia. org
15. https://en.wikipedia.org
16. https:// hindi. webdunia. com

*****